

दैनिक

द डेस्पिरा

वर्ष: 4

अंक: 267

मूल्य: 3 रु

पेज: 8

जयपुर, सोमवार/ 20 अक्टूबर /2025

जयपुर से प्रकाशित (सीकर, जोधपुर, कोटा, भरतपुर, सिरौही से प्रसारित)


 RAJ/P/2025/4253
 rera.rajasthan.gov.in/


The life you
dreamt of



COMING
SOON



FORESTA

Forest Mansions



SCAN FOR LOCATION

Sikar-Delhi Bypass, Jaipur
(Near Vidhyadhar Nagar)

0141-4311165

संक्षिप्त समाचार

उरुग्वे : इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित ?, क्या है बदलाव, 31 में से 20 सीनेटर ने किया पक्ष में मतदान

उरुग्वे , एजेंसी। उरुग्वे की सीनेट ने इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित कर दिया है जिससे यह दक्षिण अमेरिकी देश उन कुछ अन्य देशों में शामिल हो गया है जहां गंभीर रूप से बीमार मरीज अपना जीवन समाप्त करने के लिए कानूनी रूप से सहायता प्राप्त कर सकते हैं। बुधवार को उठाए गए इस कदम से उरुग्वे कैथोलिक बहुल लैटिन अमेरिका में कानून के तहत इच्छामृत्यु की अनुमति देने वाला पहला देश बन गया है। उरुग्वे में सतारूढ़ वामपंथी गठबंधन की सीनेटर पेटीसिया क्रैमर ने देश की राजधानी मोंटेवीडियो में सांसदों से कहा, ‘‘जनमत हमें इस पर विचार करने के लिए कह रहा है।’’ पिछले पांच साल से रुक-रुक कर आगे बढ़ते रहे इस कानून ने बुधवार को उस समय आखिरी बाधा पार कर ली जब संसद के उच्च सदन में 31 में से 20 सीनेटर ने इसके पक्ष में मतदान किया। निचले सदन ने अगस्त में इस विधेयक को भारी बहुमत से मंजूरी दे दी थी। चर्चा के दौरान सतारूढ़ ‘ ब्रॉड फ्रंट ’ गठबंधन के सांसदों ने इच्छामृत्यु के अधिकार का जोरदार बचाव किया। इसके लिए चलाए गए अभियान की तुलना तलाक एवं समलैंगिक विवाह की वैधता से की। अमेरिकी राज्यों, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में इच्छामृत्यु के लिए आवेदन करने का अधिकार केवल उन लोगों को दिया जाता है जिनके जीने की संभावना छह महीने या एक साल से अधिक नहीं है, लेकिन उरुग्वे में ऐसा नहीं है। ‘‘असहनीय पीड़ा’’ झेल रहे किसी भी लाइलाज बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को इसके लिए आवेदन करने का अधिकार होगा। उरुग्वे में इच्छामृत्यु चाहने वालों के लिए मानसिक रूप से सक्षम होना आवश्यक है। बेल्जियम, कोलंबिया और नीदरलैंड के विपरीत उरुग्वे में नाबालिगों के लिए इच्छामृत्यु की अनुमति नहीं है।

फ्रांस : अविश्वास प्रस्ताव से बचे पीएम सेबेस्टियन लेकोनू

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबेस्टियन लेकोनू बृहस्पतिवार को अविश्वास प्रस्ताव से बच गए। यह उनकी कमजोर नई सरकार को गिराकर फ्रांस को राजनीतिक अराजकता में और भी ज्यादा डुबो सकता था। इसी के साथ नेशनल असेंबली में लेकोनू की बड़ी चुनौती दूर हो गई।

भूकंप से दहला इंडोनेशिया का पापुआ, 6.7 तीव्रता दर्ज

जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया के पापुआ प्रांत में बृहस्पतिवार को 6.7 तीव्रता का भूकंप दर्ज किया गया। इसका केंद्र सतह से 70 किलोमीटर की गहराई में था। संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के अनुसार, भूकंप का केंद्र अबेपुरा शहर से लगभग 200 किलोमीटर दूर था, जिसकी आबादी 62,0०0 से ज्यादा है। प्रशांत सुनामी चेतावनी केंद्र ने बताया कि भूकंप के बाद सुनामी की कोई चेतावनी जारी नहीं की गई।

बांग्लादेश के विशेष दूत ने अमेरिका के भारत राजदूत सर्जियो गोर से की महत्वपूर्ण बैठक

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के अंतरिम नेता मुहम्मद यूनूस के विशेष दूत लुत्फे सिद्दीकी ने बुधवार को व्हाइट हाउस के व्हेस्ट विंग में अमेरिका के दक्षिण और मध्य एशिया के विशेष दूत और भारत के लिए राजदूत -नामांकित सर्जियो गोर से उच्चस्तरीय बैठक की। बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार के प्रेस विंग ने गुरुवार को बयान में कहा कि सिद्दीकी ने बैठक में उत्कृष्ट स्वागत और सार्थक चर्चा के लिए आभार व्यक्त किया। बैठक में दोनों पक्षों ने वाणिज्य और निवेश सहयोग, आर्थिक और प्रशासनिक सुधार, और श्रम बाजार विकास सहित कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया। साल 1953 में एडमंड हिलेरी और तेनजिग नोर्गे के साथ एवरेस्ट अभियान में शामिल अंतिम सदस्य कांचा शेरपा का 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

उरुग्वे में पारित हुआ इच्छामृत्यु को मंजूरी देने वाला कानून

मोंटेवीडियो, एजेंसी। उरुग्वे की सीनेट ने इच्छामृत्यु को अपराधमुक्त करने वाला कानून पारित कर दिया है। इस कानून के लागू होने से यह दक्षिण अमेरिकी देश उन कुछ देशों में शामिल हो गया, जहां गंभीर रोगी अपना जीवन खत्म करने को कानूनी मदद ले सकते हैं। इस कदम से उरुग्वे इच्छामृत्यु की मंजूरी देने वाला पहला देश बन गया है। बिल पास होने के बाद उरुग्वे में जश्न का माहौल रहा। ह्यूस्टन के मेयर बोले - दिवाली उत्सव में आकर गर्व हुआ ह्यूस्टन, एजेंसी। अमेरिका में सर्वाधिक भारतवशी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक ह्यूस्टन में भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने दिवाली के मौके पर शहर से साझेदारी में एक कार्यक्रम किया। इसमें समुदाय के नेता, राजनयिक व भारतीय-अमेरिकी समुदाय के सदस्य एकत्रित हुए।

आईवीएफ को सस्ता और सुलभ बनाने के लिए ट्रंप की नई पहल; बीमा कवरेज और दवा मूल्य में भारी कटौती का एलान

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन इलाज को सस्ता और सुलभ बनाने के लिए दो बड़े कदमों की घोषणा की। ये कदम उनके चुनावी वादों में से एक थे, जिन्हें उन्होंने अब अमल में लाने की शुरुआत कर दी है। ट्रंप ने व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस से घोषणा करते हुए बताया कि उनकी प्रशासन जल्द ही ऐसा दिशा-निर्देश जारी करेगी जिससे कंपनियां अपने कर्मचारियों के हेल्थ इश्योर्स प्लान में आईवीएफ कवरेज शामिल कर सकेंगी। इसके साथ ही उन्होंने एक फार्मा कंपनी के साथ समझौते की भी घोषणा की है, जिसके तहत फर्टिलिटी दवाएं अब 84% तक सस्ते दामों पर उपलब्ध होंगी।

फर्टिलिटी दवाओं पर 84% तक छूट: ट्रंप ने बताया कि ईएमडी सेरोनो, जो दुनिया की सबसे बड़ी फर्टिलिटी ड्रग निर्माता कंपनी है, अब अमेरिका में अपनी सभी फर्टिलिटी दवाएं भारी डिस्काउंट पर बेचेगी।

फ्रांस में सियासी संकट: बाल-बाल बची मैक्रों की सरकार, सदन में प्रधानमंत्री लेकोर्नु के खिलाफ दो अविश्वास प्रस्ताव गिरे

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस का ताजा सियासी संकट फिलहाल टल गया है, क्योंकि प्रधानमंत्री सेबस्टियन लेकोर्नु गुरुवार को लगातार अविश्वास प्रस्तावों से बच गए। इससे सरकार गिरने का खतरा टल गया और राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को कुछ समय के लिए राहत मिल गई। हालांकि, अब भी देश का बजट पारित कराना असली चुनौती है।

हालात में थोड़ी स्थिरता जरूर आई है। लेकिन संकट पूरी तरह टला नहीं है। यूरोप की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अब भी एक अल्पमत वाली सरकार चला रही है। संसद में कोई एक पार्टी या गठबंधन बहुमत में नहीं है। अब हर बड़ा कानून आखिरी समय पर होने वाली सौदेबाजी पर निर्भर हो गया है और अगली बड़ी परीक्षा सालाना बजट पारित कराना है, जिसे साल खत्म होने से पहले पास करना जरूरी है।

संसद में झामा : गुरुवार को 577 सीटों वाली नेशनल असेंबली में सांसदों ने वामपंथी पार्टी फ्रांस अनबोउड की ओर से लाए गए अविश्वास प्रस्ताव को खारिज कर दिया। प्रस्ताव के पक्ष में 271 वोट पड़े, जो सरकार गिराने के लिए जरूरी 289 वोटों से 18 कम थे। दूसरा अविश्वास प्रस्ताव दक्षिणपंथी पार्टी नेशनल रेनैली की ओर से लाया गया, जो विफल हो गया। अगर लेकोनू यह वोट हर जाते, तो राष्ट्रपति मैक्रों के सामने नए संसदीय चुनाव कराने, एक और नया प्रधानमंत्री खोजने (जो एक साल में फ्रांस का पांचवां प्रधानमंत्री होता) या खुद इस्तीफा देने जैसे कुछ ही

नेपाल सरकार ने भारत के साथ पारस्परिक कानूनी सहायता संधि को दी मंजूरी; सोनल मधेश के नए सीएम

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की अंतरिम सरकार ने गुरुवार को भारत के साथ आपसी कानूनी सहायता संधि को मंजूरी दे दी। इस संधि का उद्देश्य दोनों देशों के बीच आपराधिक मामलों में सहयोग को मजबूत बनाना है। यह फैसला प्रधानमंत्री सुशीला कार्की की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में लिया गया। सूचना एवं प्रसारण मंत्री जगदीश खरेल ने बताया कि इस संधि के जरिए नेपाल न केवल भारत के साथ बल्कि अन्य देशों के साथ भी कानूनी मामलों में सहयोग बढ़ा सकेगा। प्रस्तावों को राजनयिक चैनलों के जरिए आगे भेजा जाएगा। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार, यह संधि ड्रग्स तस्करी, मानव तस्करी, नकली मुद्रा और अन्य सीमा पार अपराधों पर रोक लगाने में मदद करेगी। इसके अलावा अपराधियों के लिए भारत या नेपाल को सेफ जोन की तरह इस्तेमाल करना भी मुश्किल हो जाएगा। 11 नेपाली राजदूतों को वापस बुलाया गया नेपाल सरकार ने इस बैठक में एक और अहम निर्णय लिया; 11 देशों में तैनात अपने राजदूतों को वापस बुलाने का। इन देशों में चीन, जर्मनी,



कठिन और अप्रिय विकल्प बचते, जिससे वह पहले ही इनकार कर चुके हैं।

फ्रांस इस स्थिति तक कैसे पहुंचा : जून 2024 में राष्ट्रपति मैक्रों द्वारा नेशनल असेंबली को भंग करने का फैसला उनके लिए उल्टा साबित हुआ। इसके बाद जो संसदीय चुनाव हुए, उसमें निचले सदन में मैक्रों के विरोधी नेता तो बड़ी संख्या में चुनकर आ गए, लेकिन किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। तबसे मैक्रों की अल्पमत सरकार एक-एक विधेयक के लिए समर्थन जुटाने की कोशिश कर रही है और लगातार गिर जा रही है। यह स्थिति फ्रांस की पांचवीं गणराज्य की राजनीतिक व्यवस्था से मेल नहीं खाती है, जिसकी नींव 1958 में शालं द रॉल के नेतृत्व में रखी गई थी। यह व्यवस्था एक मजबूत राष्ट्रपति और स्थिर संसद के बहुमत के लिए बनाई गई थी, न कि गठबंधन की सौदेबाजी या बिखरी हुई संसद के लिए। अब जब कोई भी एक दल या गठबंधन 289 सीटों के पूर्ण बहुमत के करीब भी नहीं है, तो यह पूरी राजनीतिक व्यवस्था अपनी मूल संरचना के खिलाफ जाकर

काम कर रही है। हर बड़ा वोट एक तनावपूर्ण मुकाबला बना रहा है और फ्रांस की शासन व्यवस्था को लेकर बुनियादी सवाल उठ रहे हैं। फ्रांसीसी मतदाताओं और पर्यवेक्षकों के लिए यह स्थिति चौकाने वाली है। जो देश कभी यूरोप की स्थिरता का मॉडल माना जाता था, वह अब एक संकट से दूसरे संकट में फंसेते चला जा रहा है।

पेंशन कानून बना अहम मुद्दा : विपक्षी दलों के कुछ सांसदों का समर्थन पाने के लिए प्रधानमंत्री लेकोर्नु ने राष्ट्रपति मैक्रों के 2023 के प्रमुख पेंशन कानून को धीरे-धीरे लागू करने का प्रस्ताव रखा। इस कानून के तहत सेवानिवृत्ति की उम्र 62 से बढ़ाकर 64 की जानी है। इस देरी से कानून के पूरी तरह लागू होने की समयसीमा लगभग दो साल आगे खिसक सकती है। इससे उन लोगों पर तुरंत असर नहीं पड़ेगा, जो अभी सेवानिवृत्ति के करीब हैं। सरकार का कहना है कि इस देरी से अगले साल 400 मिलियन यूरो (430 मिलियन डॉलर) का अतिरिक्त खर्च आएगा और 2027 तक यह लागत

राष्ट्रपति के खिलाफ भड़का जैन-जेट आंदोलन, एक की मौत और 100 घायल; इस्तीफे से जेरी ने किया इनकार

लीमा, एजेंसी। पेरू के नए राष्ट्रपति जोस जेरी ने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया है, जबकि देश में उनके खिलाफ चल रहे हिंसक विरोध प्रदर्शनों में एक प्रदर्शनकारी की मौत हो गई और करीब 1०0 लोग घायल हो गए हैं। यह प्रदर्शन मुख्य रूप से जैन-जेट युवाओं के नेतृत्व में हुआ, जिन्होंने राष्ट्रपति से पद छोड़ने की मांग की थी।

अधिकारियों के अनुसार, घायलों में 80 पुलिसकर्मी और 10 पत्रकार शामिल हैं। जांच एजेंसियां उस गोलीबारी की जांच कर रही हैं, जिसमें एक प्रदर्शनकारी की मौत हुई। राष्ट्रपति जेरी ने संसद का दौरा करने के बाद स्थानीय मीडिया से कहा मेरा दायित्व देश की स्थिरता बनाए रखना है। यही मेरी जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता है।

कैसे शुरू हुआ आंदोलन : लगभग एक महीने पहले शुरू हुआ

बढ़कर 1.8 बिलियन यूरो (1.9 बिलियन डॉलर) हो सकती है। हालांकि, उन्होंने कहा है कि इन खर्चों की भरपाई के लिए अलग से प्रबंध किया जाएगा। फ्रांस में कई लोगों के लिए पेंशन का मुद्दा बहुत संवेदनशील है। 2023 के इस पेंशन कानून ने बड़े विरोध प्रदर्शनों और हड़तालों को जन्म दिया, जिससे पेरिस की सड़कों पर कचरे के ढेर लगा गए। इसके बाद सरकार ने अनुच्छेद 49.3 का सहारा लिया, जो प्रधानमंत्री को बिना संसद के वोट के कानून पारित कराने का विशेष सांविधानिक अधिकार देता है। लेकिन इस कदम के खिलाफ विरोध और तेज हो गया। अगली बजट की चुनौती गुरुवार को अविश्वास प्रस्तावों के विफल होने के साथ ही मैक्रों की सरकार को थोड़ा वक्त मिल गया है। अब लड़ाई 2026 के बजट पर केंद्रित हो गई है, जिस पर चर्चा 24 अक्टूबर से शुरू होगी। लेकोर्नु ने वादा किया है कि वह बजट पारित कराने के लिए अनुच्छेद 49.3 का उपयोग नहीं करेंगे। यानी बिना वोट के कोई शॉर्टकट नहीं होगा। हर एक प्रावधान को संसद में समर्थन हासिल करना होगा, जबकि संसद अब विभाजित और कमजोर स्थिति में है। सरकार और उसके सहयोगी के पास 200 से भी कम सीटें हैं। बहुमत के लिए उन्हें विपक्ष का समर्थन चाहिए। इस गणित में सोशलिस्ट पार्टी (जिसके पास 69 सांसद हैं) और कंजरवेटिव रिपब्लिकन्स (जिनके पास 50 सांसद हैं) दोनों संभावित निर्णायक समूह बन जाते हैं।

पापुआ क्षेत्र में इंडोनेशियाई सेना और अलगाववादी समूह के बीच संघर्ष, एक गांव में 14 लोगों की मौत



जकार्ता, एजेंसी। इंडोनेशिया की सेना ने गुरुवार को कहा कि उसने पापुआ क्षेत्र के इंटान जाया जिले के सोआंगामा गांव को फिर से अपने कब्जे में ले लिया। सेना का दावा है कि इस संघर्ष में 14 अलगाववादी मारे गए। हालांकि, अलगाववादियों ने यह दावा खारिज किया है और कहा कि मारे गए में केवल तीन ही लड़ाके थे, जबकि नौ आम नागरिकों की हत्या की गई। सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल इवान द्वि प्रिहरतोनो ने बताया कि बुधवार सुबह दर्जनों अलगाववादी, जो हथियार और धनुष-बाण लेकर आए थे, ने सैनिकों पर हमला किया। सैनिक उस समय एक अलगाववादी पोस्ट पर कारवाई करने की तैयारी कर रहे थे। छह घंटे से अधिक समय तक चला संघर्ष प्रिहरतोनो के अनुसार, सैनिकों ने छह घंटे और 30 मिनट तक चली लड़ाई के बाद अलगाववादियों को खदेड़ दिया और गांव पर नियंत्रण कर लिया। उन्होंने बताया कि सैनिकों को किसी भी तरह के नुकसान का सामना नहीं करना पड़ा। सेना ने इस दौरान एक

घरेलू राइफल, चार एयर राइफल, गोलियां, दूरबीन, संचार उपकरण और अलगाववादी संगठन का मॉर्निंग स्टार झंडा बरामद किया। उन्होंने कहा, बाकी अलगाववादी जंगल की ओर भाग गए और हमने उनका बेस कब्जे में ले लिया। अलगाववादियों ने सेना का दावा किया खारिज पश्चिम पापुआ लिबेरेशन आर्मी (फ्री पापुआ ऑर्गेनाइजेशन का सैन्य हिस्सा) के प्रवक्ता सेबी सांबॉम ने सेना के दावे को खारिज किया। उन्होंने कहा गांव में कोई अलगाववादी बेस नहीं था और मारे गए 14 लोगों में से नौ आम नागरिक थे। उनका कहना था कि केवल तीन ही अलगाववादी थे। सांबॉम ने बताया कि सेना ने एक घर को घेर लिया और उसे अलगाववादी पोस्ट समझकर आठ लोगों की हत्या कर दी। उन्होंने कहा, हमारे पास युद्ध के नियम हैं, हम कभी भी किसी आवासीय इलाके में बेस नहीं बनाएंगे। पापुआ में हिंसा का इतिहास पापुआ में अलगाववादी आंदोलन 196० के दशक से चल रहा है।

पापुआ क्षेत्र में इंडोनेशियाई सेना और अलगाववादी समूह के बीच संघर्ष, एक गांव में 14 लोगों की मौत

राष्ट्रीय लोकपाल कार्यालय के अनुसार, हिंसक झड़पों में 24 प्रदर्शनकारी और 80 पुलिसकर्मी घायल हुए। पत्रकारों पर भी हमला हुआ, जिनमें से छह को पैलैटुस से चोट लगी और चार अन्य पर पुलिस ने हमला किया।

विवादों में घिरे राष्ट्रपति जेरी : जोस जेरी ने हाल ही में अपदस्थ राष्ट्रपति डिना बोलुआतें की जगह ली थी, जो विरोध प्रदर्शनों को कुचलने और अपराध पर नियंत्रण में विफल रहने के कारण बेहद अलोकप्रिय थीं। 38 वर्षीय जेरी पहले संसद के अध्यक्ष थे। उनके प्रधानमंत्री एर्नेस्टो अल्वारेज एक अति-दक्षिणपंथी पूर्व न्यायाधीश हैं, जिन्होंने पहले जैन-जेट आंदोलन को अराजकता फैलाने वाला गिरोह बताया था। जेरी

पूर्व अमेरिकी एनएसए बोल्टन पर 18 मामलों में आरोप तय:आजीवन जेल हो सकती है; ट्रम्प के खिलाफ जाकर भारत का समर्थन किया था

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के पिछले कार्याकाल में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) रहे जॉन बोल्टन पर गोपनीय जानकारी के गलत इस्तेमाल और लीक करने के आरोप में केस दर्ज हुआ है। बोल्टन पर राष्ट्रीय रक्षा से जुड़ी जानकारी शेर करके के 8 और गोपनीय दस्तावेज अपने पास रखने के 10 आरोप लगाए गए हैं। अमेरिकी मीडिया रिपोर्टर्स के मुताबिक, जॉन बोल्टन ने ट्रम्प प्रशासन में काम करते वक़्त अपनी गतिविधियों के नोट्स और डायरी एंटीज़ एओएल ईमेल अकाउंट में सेव की थीं। जांच एजेंसियों का कहना है कि इन नोट्स में राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी संवेदनशील बातें शामिल थीं, जिन्हें उन्होंने खुद को और परिवार को मेल किया था। 76 साल के बोल्टन अगर दोषी पाए गए तो उन्हें

आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। 2021 में बोल्टन का ईमेल अकाउंट ईरानी हैकर्स ने हैक कर लिया था। हैकर्स ने धमकी दी थी कि अगर बोल्टन के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई तो वे यह जानकारी लीक कर देंगे, जैसे 2016 में हिलेरी क्लिंटन के ईमेल लीक हुए थे। बोल्टन ने ट्रम्प के खिलाफ भारत का समर्थ किया था बोल्टन ने अगस्त में सीएनएन को दिए एक इंटरव्यू में भारत पर कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने के फैसले को भारी भूल बताया था। उन्होंने ने आशंका जाहिर की है कि रूस को लगाना गया एकस्ट्रा टैरिफ कहीं उल्टा न पड़ जाए। उन्होंने कहा था कि अमेरिका, भारत को रूस और चीन से दूर रखने के लिए कई साल



से कोशिश कर रहा था लेकिन अब वह कोशिश कमजोर पड़ चुकी है। इसके अलावा बोल्टन ने पिछले महीने कहा था कि ट्रम्प और पीएम मोदी के बीच पहले की खास दोस्ती अब खत्म हो चुकी है। ब्रिटिश मीडिया एलबीसी को दिए इंटरव्यू में बोल्टन ने ट्रम्प की नीति की आलोचना करते हुए कहा, व्हाइट हाउस ने अमेरिका-भारत संबंधों को दशकों पीछे धकेल दिया है, जिससे मोदी रूस और चीन के करीब आ गए हैं। चीन ने खुद को अमेरिका और ट्रम्प के विकल्प के रूप में पेश किया है।

ट्रम्प ने बोल्टन को बुरा आदमी बताया : अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने बोल्टन पर आरोप तय होने के बाद प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि वो बुरा आदमी, जैसा करोगे वैसा भरोगे। बोल्टन ट्रम्प प्रशासन में 2018 से 2019 तक राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार रहे। दोनों के बीच कई मतभेद रहे। बोल्टन ने इस्तीफा देने के बाद ट्रम्प पर तीखे आरोप लगाए और किताब लिखी, जिसे ट्रम्प ने चुनाव से पहले रोकने की कोशिश की थी। पहली जांच 2021 में बंद हुई थी, लेकिन अब मामला फिर से खोला गया है। केस अब फेडरल कोर्ट में चलेगा।

बेंगलुरु में फैमिली संग बनाएं यादगार वीकेंड

बेंगलुरु में वीकेंड पर कुछ जगहें ऐसी हैं, जहां पर भीड़ बहुत ज्यादा रहती है। इन जगहों पर अच्छी खासी चहल-पहल होती है। ऐसे में लोग अपने परिवार के साथ इन जगहों पर घूमने के लिए निकल जाते हैं। बारिश के मौसम में इन जगहों का नजारा बेहद खूबसूरत हो जाता है। ऐसे में इस बार के वीकेंड पर अगर आप भी अपने दोस्तों, फैमिली या वाइफ के साथ इन जगहों पर घूमने के लिए जा सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बेंगलुरु की कुछ सड़े स्पेशल जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अपनी फैमिली के साथ क्वालिटी टाइम बिता सकते हैं।

उल्सूर झील

उल्सूर झील एम.जी. रोड के पास है। यह झील मात्र 2 किमी की दूरी पर है और यहां तक पहुंचने के लिए आपको करीब 10 मिनट का समय लगेगा। यह झील सुबह 6 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहता है।

उल्सूर झील पुरानी और खूबसूरत झीलों में से एक है। यह



झील 50 हेक्टेयर के क्षेत्र में फैली है। बारिश के मौसम में यहां पर लोगों को आना अधिक पसंद होता है। क्योंकि इस दौरान यहां पर बरा-भरा वातावरण और बोटिंग लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह जगह बेंगलुरु के पास बेस्ट कपल स्पॉट माना जाता है।

वी आर बेंगलुरु मॉल

आप सड़े का समय बिताने के लिए बेंगलुरु के वी आर बेंगलुरु मॉल भी जा सकते हैं। इस मॉल को शहर का सबसे बेस्ट और मॉडर्न मॉल्स में से एक माना जाता है। यहां पर पूरे सप्ताह लोगों की भीड़ होती है। रविवार को यहां पर सबसे ज्यादा चहल-पहल होती है।

प्रीमियम सुविधाओं और बेहतरीन ब्रांड्स के अलावा आपको मॉल के बाहर तरह-तरह के स्टॉल्स देखने को मिल जाएंगे। यहां पर आप सस्ते में खाने-पीने का सामान ले सकती हैं। फ्रेंड्स, फैमिली और कपल्स के लिए यह जगह फेवरेट है। गैंगअउट स्पॉट है। इस मॉल में बैठने की अच्छी जगह है और आप यहां पर समय बिता सकती हैं। वी आर बेंगलुरु मॉल सुबह 9 बजे से रात के 11 बजे तक खुला रहता है। यह मॉल क्वाइटफील्ड मेन रोड, देवसद्रा इंडस्ट्रियल एस्टेट, महादेवपुर, बेंगलुरु में है।

लालबाग बॉटनिकल गार्डन

बता दें कि यह जगह परिवार के साथ घूमने के लिहाज से काफी अच्छी मानी जाती है। यही वजह है कि रविवार को यहां पर सबसे ज्यादा भीड़ देखने को मिलती है। वहीं लालबाग बॉटनिकल गार्डन में साल में 2 बार फूलों की भव्य प्रदर्शनी भी लगती है। वहीं 26 जनवरी और 15 अगस्त को यहां पर सबसे ज्यादा लोग आते हैं। यह गार्डन मावली बेंगलुरु में है। यह गार्डन सुबह 7 बजे से रात के 10 बजे तक खुला रहता है और यह बेंगलुरु की रोमांटिक जगहों में से एक है।



उत्तर भारत की दीपावली

उत्तर भारत में दीवाली को भगवान राम के अयोध्या वापसी के स्वागत में मनाया जाता है। लोग अपने घरों को दीयों और रंगोली से सजाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और मिठाइयां बांटते हैं। दीवाली की रात को, लोग देवी लक्ष्मी की पूजा-अर्चना करते हैं और धन की देवी से आशीर्वाद मांगते हैं।

पश्चिम भारत की दीपावली

पश्चिम भारत की बात करें, तो खासतौर से गुजरात में दीवाली को नए साल के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान लोग अपने घरों को साफ करते हैं, नए कपड़े खरीदते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। गुजरात में, दीवाली के दौरान पतंग उड़ाना एक लोकप्रिय परंपरा बनी हुई है।

दक्षिण भारत की दीपावली

दक्षिण भारत में दीवाली को थोड़ा अलग तरीके से मनाया जाता है। तमिलनाडु में, दीवाली को नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर राक्षस का वध करने का प्रतीक है। कर्नाटक में, दीवाली को बाली चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है, जो भगवान विष्णु द्वारा बाली राक्षस का वध करने का प्रतीक है।

पूर्वी भारत में दीपावली

पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल में दीवाली का त्योहार काली पूजा के साथ अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व केवल प्रकाश का त्योहार ही नहीं, बल्कि शक्ति और विनाश की देवी, मां काली की आराधना का पावन अवसर भी है। माना जाता है कि देवी काली बुराई पर अच्छाई की

जीत का प्रतीक हैं। बता दें, काली पूजा बंगाली संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। यह त्योहार लोगों को एकजुट करता है और सामाजिक बंधनों को मजबूत भी बनाता है।

अलग-अलग राज्यों का अपना-अपना अंदाज

भारत के अन्य हिस्सों में भी दीवाली को अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। उदाहरण के लिए, गोवा में, दीवाली को दीपावली के रूप में मनाया जाता है, जो प्रकाश का त्योहार है। पंजाब में, दीवाली को बंदी छोर दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो सिखों के छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद साहिब की मुक्ति का दिन है।

दीवाली की विविधता भारत की विविधता का ही प्रतिबिंब है। भारत के विभिन्न राज्यों में, दीवाली को अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है, लेकिन सभी जगहों पर दीवाली का मूल अर्थ एक ही है- बुराई पर अच्छाई की जीत, अंधेरे पर प्रकाश की जीत। बता दें, दीवाली केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। दीवाली हमें एक-दूसरे के साथ जुड़ने, प्यार और खुशी बांटने और नए साल की शुरुआत करने का मौका देती है।

इस दौरान, लोग एक-दूसरे को मिठाइयां खिलाते हैं, पटाखे फोड़ते हैं और उपहार भी देते हैं। दीवाली की रात को, लोग एक-दूसरे के घरों में जाते हैं और शुभकामनाएं देते हैं। दीवाली एक ऐसा त्योहार है जो सभी धर्मों और जातियों के लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह त्योहार हमें सिखाता है कि बुराई पर अच्छाई की हमेशा जीत होती है और अंधेरे में भी उम्मीद की किरण हमेशा जलती रहती है।



दीवाली के दिन इस खास वजह से बनाई जाती है जिमीकंद की सब्जी



दीवाली का त्योहार आने में अब कुछ ही दिन बाकी है। रोशनी का यह पर्व हर साल पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। इस साल यह त्योहार 31 अक्टूबर को मनाया जाएगा। दीयों और मोमबत्तियों की रोशनी से जगमगाता यह यह पर्व अंधकार में रोशनी की तरह जगमगाने की प्रेरणा देता है। इस दौरान लोग अवसर अपने घरों की साज-सज्जा करते हैं और ढेर सारे पकवान भी बनाते हैं, लेकिन दीवाली का यह पर्व सिर्फ मोमबत्तियां, दीयों और मिठाइयों तक ही सीमित नहीं है। इस दौरान कई रीति-रिवाज और परंपराएं भी निभाई जाती हैं।

इन्हीं परंपरा में से एक है दीवाली के दिन सूरन यानी जिमीकंद की सब्जी बनाना। इस दिन कई घरों में खास तौर पर जिमीकंद की सब्जी बनाई जाती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे कि दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाने का क्या महत्व है और उसके पीछे का कारण क्या है।

क्यों बनाई जाती है जिमीकंद की सब्जी?

जिमीकंद जिसे ओल, सूरन या हाथी पैर रतालू के नाम से भी जाना जाता है, दीवाली के मौके पर खासतौर से बनाई जाती है। इसे बनाने की यह परंपरा मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में निभाई जाती है। इस परंपरा का पालन ज्यादातर कायस्थ और ब्राह्मण समुदाय के लोग करते हैं। दरअसल, एक मान्यता है कि दीवाली पर इस सब्जी को बनाना शुभ होता है और इससे घर परिवार में खुशहाली आती है।

समृद्धि का प्रतीक है जिमीकंद

दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाना इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इस जड़ वाले सब्जी को समृद्धि का संकेत माना जाता है। दरअसल, जिमीकंद की कटाई के बाद अगर इसका कुछ हिस्सा मिट्टी में रह जाए, तो उससे दूसरा जिमीकंद उग जाता है, जिसे समृद्धि का सूचक मानते

हैं। साथ ही यह भी माना जाता है कि यह सब्जी कभी खराब नहीं होती। ऐसे में दीवाली के दिन इस सब्जी को बनाकर मां लक्ष्मी को भोग लगाया जाता है और उनसे प्रार्थना की जाती है कि जिस तरह जिमीकंद कभी खराब नहीं होता और हमेशा फलता-फूलता है, उसी तरह उनके घर में भी खूब तरक्की और समृद्धि आए।

जिमीकंद के फायदे

रीति-रिवाज और परंपरा के अलावा जिमीकंद वैज्ञानिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण होता है। यह सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होने की वजह से इम्युनिटी बढ़ाने में मदद करता है। साथ ही इसमें मौजूद ढेर सारे विटामिन, मिनरल, फैट, प्रोटीन, पोटेशियम और घुलनशील फाइबर कई तरह की समस्याओं से बचाव करते हैं। इसके अलावा सूरन हार्ड ब्लड प्रेशर कम करने में भी मदद करता है।

पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक, देश में अलग-अलग अंदाज में मनाया जाता है दीपावली का त्योहार

दीपावली का त्योहार भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अहम हिस्सा है। हालांकि, रोशनी का यह त्योहार देश के हर हिस्से में एक ही तरह से नहीं मनाया जाता। इस आर्टिकल में हम आपको दीवाली की उन विभिन्न परंपराओं से रूबरू कराएंगे जो भारत के अलग-अलग राज्यों में प्रचलित हैं। साथ ही, हम आपको कुछ ऐसे रोचक तथ्यों के बारे में भी बताएंगे जो दीपावली के इतिहास और महत्व को और गहरा बनाने का काम करते हैं। आइए जानें।



कम समय और कम बजट में भी चमचमाएगा आपका घर, बस इस तरह से कर लें सजावट

आज के समय लोग अपने घर के इंटीरियर को सजाने के लिए तरह-तरह के उपयोग करते रहते हैं। वहीं, कुछ लोग अपने घर के अंदर नए-नए फर्नीचर को मार्केट से लेकर आते हैं तो कई लोग घर के दीवारों पर तरह-तरह की पेंटिंग लगाते हैं। ऐसे में अगर आप भी अपने घर के इंटीरियर को सजाने का प्लान कर रहे हैं तो हम आपके लिए कुछ बेहतरीन टिप्स लेकर आए हैं। इस टिप्स की मदद से आप अपने घर को कम बजट और एकदम कम समय में भी आसानी से सजा सकते हैं।

पुरानी चीजों से घर को दें नया लुक

आप अपने घर को पुराने चीजों की मदद से भी सजा सकते हैं। इसमें आपके मामूली खर्च करने पड़ेंगे। आप घर में पड़ी पुरानी बोतलें, डिब्बे या फिर जार को सही से कलर कर लें और आप इसको सजावट के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आप पुरानी साड़ियों या फिर कपड़ों को भी होम डेकोरेशन के तौर पर इस्तेमाल कर सकती हैं।



दीवारों की सजावट कैसे करें?

आप अपने घर की दीवारों को सजा सकते हैं, इससे आपके इंटीरियर का लुक काफी बेहतर आएगा। आप दीवारों को पेंट करा सकते हैं या फिर आप इस पर पेंटिंग्स या फोटोज भी लगा सकते हैं। आप इसको मार्केट से आसानी से खरीद सकते हैं। आप दीवारों को सजाने के लिए वॉलपेपर का भी उपयोग कर सकते हैं। यह सस्ता होने के साथ-साथ लगाने में भी काफी आसान होता है।

घर के अंदर लगाएं सजावटी पौधे

घर को सजाने के लिए आप सजावटी पौधे का उपयोग कर सकते हैं। आप इसके लिए प्राकृतिक पौधों का ही उपयोग करें, जो अंदर की हवा को भी साफ करने में मदद करेंगे। आप इन पौधों को हैंग भी कर सकते हैं या फिर जमीन पर भी सीधे गमले में रख सकते हैं।

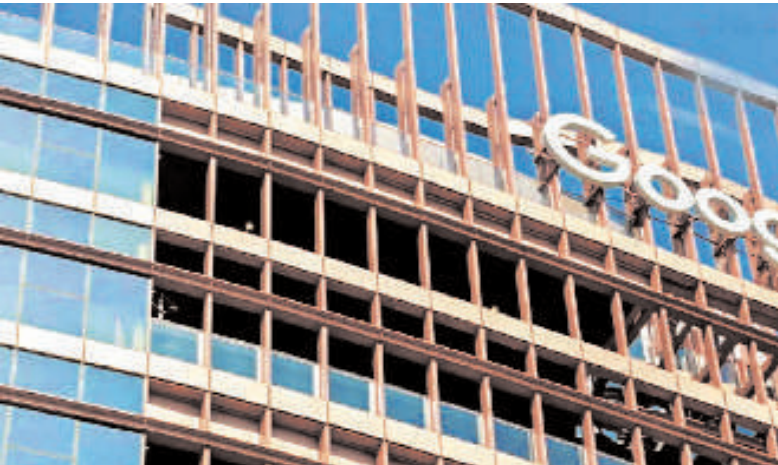
संपादकीय

भारत में गूगल का निवेश मुनाफे का सौदा

अमेरिका की वीजा नीति और ट्रंप शुल्क से कारोबारी रिशतों में दबाव के बीच गूगल की भारत में निवेश की घोषणा अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर बड़ी रणनीतिक सफलता है। विशाखापत्तनम में कृत्रिम मेधा का बड़ा केंद्र बनाया जाएगा। इसके लिए गूगल समूह पांच साल में 1.33 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगा। कृत्रिम मेधा के बढ़ते वैश्विक बाजार में यह निवेश इस बात को रेखांकित करता है कि कारोबार सुगमता के लिहाज से भारत वैश्विक स्तर पर पसंदीदा बना हुआ है। भारत के पास विशाल उपयोगकर्ता आधार है। स्पष्ट है कि आर्थिक कटनीति के लिहाज से यह परियोजना भारत को वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान करेगी। तकनीकी ताकत भी बढ़ेगी। इस निवेश की घोषणा के बाद गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुंदर पिचाई ने

सोशल मीडिया पर जो लिखा, उससे कई सार्थक संकेत मिले हैं। पिचाई के मुताबिक, निवेश से भारत में 1.83 लाख नई नौकरियां पैदा होंगी। विशाखापत्तनम के कृत्रिम मेधा परिसर की शुरूआती क्षमता एक गीगावाट से कई गीगावाट तक जाएगी। यह परिसर गूगल का अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा कृत्रिम मेधा केंद्र बनेगा, जो भारत को वैश्विक तकनीकी के मानचित्र पर और मजबूत करेगा। कई स्तरों पर इसके दूरगामी नतीजे होंगे।

निस्संदेह, जिस तेजी से कृत्रिम मेधा क्षेत्र का विस्तार हो रहा है और अमेरिका तथा चीन जैसे मुल्क इसमें बढ़त लिए हुए हैं, उसे देखते हुए भारत को ऐसे निवेश और तकनीकी सहयोग की बहुत आवश्यकता है। यह कमी गूगल के निवेश से पूरी हो गई है। गूगल उसी देश की कंपनी है,



जहां के राष्ट्रपति ने भारत पर शुल्क लगा कर दबाव बनाने की कोशिश की है।

वे खुल कर कह चुके हैं कि वे नहीं चाहते, अमेरिकी कंपनियां भारत में निवेश करें या निर्माण संयंत्र लगाएं। वे धमकी तक दे चुके हैं। एप्पल कंपनी के मुख्य कार्यकारी टिम कुक को दी गई भारी शुल्क लगाने की धमकी की यादें ताजा हैं। लगता नहीं है कि धमकियों के बावजूद एप्पल व अन्य ने भारत से काम समेटा।

दरअसल, आने वाले दिनों में तकनीक के स्तर पर भारत चिप और कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका की योजना बना रहा है। इसके लिए मजबूत नीतियां तैयार की गई हैं और बड़ी कंपनियों से वैश्विक स्तर पर गठबंधन किए हैं। दूसरे, भारत की ताकत उसका बड़ा मध्यवर्ग है। अमेरिकी कंपनियां हमेशा की तरह भारत के इस

बड़े बाजार को देख रही हैं। हर स्तर पर भारत मुनाफे का बाजार है। तभी एप्पल और गूगल जैसी कंपनियां भारत में अरबों रुपए का निवेश कर रही हैं। अगर एप्पल के कमाई के आंकड़े को देखें, तो कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2024 में भारत से 67,100 करोड़ का राजस्व अर्जित किया है, जो पिछले वर्ष से 36 फीसद अधिक है।

कंपनी का मुनाफा बढ़ कर 2746 करोड़ हो गया है। टेस्ला ने भी भारतीय बाजार को देखते हुए यहां कदम रखा है। अब गूगल ने बड़ा निवेश किया है। गूगल के इस निवेश से वैश्विक निवेशकों को यह संदेश अवश्य गया होगा कि भारत इस लिहाज से दुनिया के सबसे सुरक्षित देशों में से एक है। वे तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर भारत पर भरोसा कर सकते हैं।

दिल्ली में हरित पटाखों को मंजूरी देने का निर्णय महत्वपूर्ण कदम



दिल्ली में हरित पटाखों को मंजूरी देने का निर्णय महत्वपूर्ण कदम है। शीर्ष अदालत ने लोगों की भावनाओं का ख्याल रखा है। पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली में वायु गुणवत्ता लगातार खराब हुई है। दीपावली पर तो वायु प्रदूषण कई गुना बढ़ जाता है। पिछले वर्ष पटाखों पर प्रतिबंध के बावजूद स्थिति बिगड़ी और हवा की गुणवत्ता बेहद खराब हो गई। हर साल वायु प्रदूषण का बेतहाशा बढ़ना चिंता का विषय है। नागरिकों को पटाखों से होने वाले प्रदूषण से सचेत करने के लिए कई बार पहल हुई है। हरित पटाखों पर भी जोर दिया गया। मगर इसकी आड़ में पारंपरिक पटाखे भी खूब बिके। नतीजा यह कि पिछली बार शीर्ष अदालत का सख्त रवैया अखिराकार करना पड़ा। मगर इस बार दिल्ली और केंद्र सरकार के साझा अनुरोध पर उसने पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में हरित पटाखों पर छूट दी है। सिर्फ इन्हीं पटाखों को बेचने और फोड़ने की इजाजत देकर अदालत ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति संतुलित दृष्टिकोण का परिचय दिया है। अब नागरिकों का भी दायित्व है कि वे दिशा-निर्देशों का ईमानदारी से पालन करें ताकि अन्य लोगों को कोई असुविधा न हो और पर्यावरण भी सुरक्षित रहे। पटाखों से वायु प्रदूषण और उससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव किसी से छिपा नहीं है। पटाखों से निकलने वाला खतरनाक धुआं वातावरण में काफी समय तक रहता है। इसका अगर लोगों की सेहत पर पड़ता है। फिर भी हर बार इसे नजरअंदाज कर दिया जाता है। दरअसल, दिल्ली में चोरी-छिपे आने वाले पारंपरिक पटाखे अधिक नुकसान पहुंचाते रहे हैं। ऐसे में शीर्ष न्यायालय के सख्त आदेश से उम्मीद कर सकते हैं कि दिल्ली सहित पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में लोग निर्धारित समय और तय दिशा-निर्देशों के मुताबिक केवल हरित पटाखे चलाएंगे। यानी ऐसे पटाखे जो अन्य पटाखों की तुलना में कम प्रदूषण करते हैं। नागरिकों को अदालत के इस आदेश को गंभीरता से लेना चाहिए कि पर्यावरण के साथ अब कोई समझौता नहीं होगा। उन्हें पटाखे खरीदने से लेकर फोड़ने तक संयम का परिचय देना होगा

आज का कार्टून

बहु, दामाद, समधन जीतनराम मांझी ने 6 मं से 3 घरवालों को दिया टिकट

इसे कहते हैं, पार्टी ही परिवार है और परिवार ही पार्टी!!



शिक्षा के प्रति यह उपेक्षा हमारे सत्ताधीशों की संवेदनहीनता का भी पर्याय है। शिक्षकों की नियुक्ति में जिस बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के मामले विभिन्न राज्यों में सामने आए हैं, उससे शिक्षा विभाग की प्रदूषित कार्य संस्कृति का बोध होता है। आखिर क्या वजह है कि देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की पर्याप्त संख्या होने के बावजूद स्कूलों में शिक्षकों की कमी बनी हुई है। यह स्थिति हमारे तंत्र की विफलता को ही उजागर करती है। एक समस्या यह भी है कि शिक्षक जटिल भौगोलिक स्थितियों वाले स्कूलों में काम करने से कतराते हैं। यदि इन स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति हो भी जाती है तो वे दुर्गम से सुगम स्कूलों में अपना तबादला ज्वाइन करने के तुरंत बाद करवा लेते हैं। जिसमें राजनीतिक हस्तक्षेप से लेकर विभागीय लेन-देन की भी शिकायत होती रहती है। यही वजह है कि शहरों व आसपास के इलाकों में स्थित स्कूलों में शिक्षकों की तैनाती जरूरत से ज्यादा भी देखी जाती है।

हस्तक्षेप से लेकर विभागीय लेन-देन की भी शिकायत होती रहती है। यही वजह है कि शहरों व आसपास के इलाकों में स्थित स्कूलों में शिक्षकों की तैनाती जरूरत से ज्यादा भी देखी जाती है।



क्या बिहार में सफल होगी कांग्रेस ?

संतोष कुमार पाठक

बिहार का मामला तो राहुल गांधी के नेतृत्व की स्वीकार्यता को लेकर सबसे बड़ा झटका साबित होता हुआ नजर आ रहा है। एक तरफ आरजेडी है जिसके नेता तेजस्वी यादव ने खुल कर राहुल गांधी की प्रधानमंत्री पद की दावेदारी का समर्थन कर दिया है तो वहीं दूसरी तरफ राहुल गांधी है जो लगातार पूछे जाने के बावजूद भी तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं कर रहे हैं। जबकि राजनीतिक सच्चाई तो यही है कि बिहार में विपक्षी गठबंधन में आरजेडी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। कांग्रेस और आरजेडी में सीटों के बंटवारे को लेकर भी घमासान मचा हुआ है।



अखिलेश यादव से लेकर तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री एवं डीएम के सुप्रियो स्टालिन तक से उनके व्यक्तिगत संबंध मजबूत होते नजर आए। जम्मू कश्मीर में भी विधानसभा चुनाव जीतने में राहुल गांधी और नेशनल कांफ्रेंस नेता उमर अब्दुल्ला की व्यक्तिगत कैमिस्ट्री का जबरदस्त योगदान माना जाता है। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने तो खुलकर राहुल गांधी को इंडिया गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री पद के

लिए उम्मीदवार तक बता दिया। लेकिन इन सबके बावजूद अचानक देश की राजनीति तेजी से बदलती हुई नजर आने लगी है। जम्मू कश्मीर में राज्यसभा सीट और विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस आमने-सामने आ गए हैं। जम्मू कश्मीर से राज्यसभा सांसदों के लिए होने वाले चुनाव में उमर अब्दुल्ला की पार्टी ने तीनों सेफ सीट पर अपने उम्मीदवार उतार दिए हैं और कांग्रेस को जो चौथी सीट ऑफर की है, उसे

जीतना बहुत मुश्किल है। कांग्रेस पहले से ही इसे लेकर अपने सहयोगी दल से नाराज चल रही है वहीं अब विधानसभा की जिन 2 सीटों पर उपचुनाव होना है, उसे लेकर भी मामला फंसता हुआ ही नजर आ रहा है। राज्य में विधानसभा की 2 सीटों- बडगाम और नगरोटा में 11 नवंबर के अध्यक्ष तारिक हमिद करी ने उमर अब्दुल्ला की पार्टी पर गठबंधन के सिद्धांतों का अनादर करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि वह राज्यसभा की एक सेफ सीट देने के अपने वादे से मुकर गई। कांग्रेस ने गठबंधन धर्म की याद दिलाते हुए सख्त शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा है कि या तो नेशनल कांफ्रेंस उन्हें विधानसभा की एक सीट दे या फिर कांग्रेस दोनों ही सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार देगी।

महाराष्ट्र में भी विधानसभा चुनाव के समय से ही शुरू हुई खटास कम सिने का नाम नहीं ले रही है। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद मोदी सरकार द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर और दुनिया भर में भेजे गए सांसदों के प्रतिनिधिमंडल को लेकर एनसीपी और कांग्रेस के सुर अलग-अलग तो नजर आए हैं। प्रधामंत्री और मुख्यमंत्री के जेल जाने के बाद इस्तीफे की बाध्यता वाले बिल पर गठित की जाने वाली जेपीसी में शामिल नहीं होने को लेकर भी कांग्रेस इंडिया गठबंधन में शामिल

सहयोगी दलों को अपने साथ ला पाने में नाकामयाब होती नजर आ रही है।

वहीं बिहार का मामला तो राहुल गांधी के नेतृत्व की स्वीकार्यता को लेकर सबसे बड़ा झटका साबित होता हुआ नजर आ रहा है। एक तरफ आरजेडी है जिसके नेता तेजस्वी यादव ने खुल कर राहुल गांधी की प्रधानमंत्री पद की दावेदारी का समर्थन कर दिया है तो वहीं दूसरी तरफ राहुल गांधी है जो लगातार पूछे जाने के बावजूद भी तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं कर रहे हैं। जबकि राजनीतिक सच्चाई तो यही है कि बिहार में विपक्षी गठबंधन में आरजेडी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। कांग्रेस और आरजेडी में सीटों के बंटवारे को लेकर भी घमासान मचा हुआ है। सहयोगी दलों के साथ कांग्रेस की यह खींचतान और महत्वपूर्ण मौकों पर राहुल गांधी की गैरमौजूदगी उनके नेतृत्व पर ही स्वाभाविक निशान लगाती नजर आती है। पता नहीं राहुल गांधी इस तथ्य को समझ पा रहे हैं या नहीं और इससे भी बड़ा सवाल यह कि आखिर राहुल गांधी को इस तरह की सलाह क्यों देता है कि उन्हें दिल्ली में होने के बावजूद तेजस्वी यादव से मुलाकात नहीं करनी चाहिए। किसी वेणुगोपाल और तेजस्वी यादव की जगह पर अगर राहुल सीधे तेजस्वी के साथ बैठकर बात करते तो शायद मामला इतना उलझता नहीं।

पाक सैनिकों के पैंट की तालिबान ने निकाली परेड

'93000 पैंट्स सेरेमनी 2.0' का दे दिया है नाम, भारत से है कनेक्शन

गुजरात कैबिनेट में 19 नए चेहरे, 3 महिलाओं को जगह



काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच तनाव लगातार बना हुआ है। इस बीच तालिबान लड़ाकों ने कुछ ऐसा किया है, जो सोशल मीडिया पर ट्रेंड होने लगा है। तालिबान लड़ाकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के पैंट की परेड निकाल दी। इसके अलावा उन टैंकों को भी दिखाया जो उन्होंने पाकिस्तान सेना से कब्जा किया है। तालिबान के इस ऐक्शन का भारत से भी कनेक्शन जुड़ गया है। असल में अफगानिस्तान के एक्विविस्ट्स ने इसे '93000 पैंट्स सेरेमनी 2.0' का नाम दे दिया है। बता दें कि 1971 में भारत के खिलाफ युद्ध के दौरान 93000 पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया था। तब से ही यह नंबर पाकिस्तान के लिए शर्म का प्रतीक बन गया है। इसके साथ ही एक्स पर 93000 एक ट्रेंडिंग टॉपिक बन गया। इससे जुड़ी पोस्ट्स में 1971 की जंग में पाकिस्तान के लेफ्टिनेंट जनरल रहे आमिर अब्दुल्ला नियाजी की फोटो भी है।



इसमें वह भारत के लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोरा के सामने आत्मसमर्पण के कागजों पर दस्तखत कर रहे हैं। 1971 की यह तस्वीर भारतीय सेना के शौर्य की सबसे शानदार प्रतीक

है। 13 दिनों तक चली लड़ाई के बाद पाकिस्तानी सेना प्रमुख ने 93000 सैनिकों के साथ भारतीय सेना और बांग्लादेश की मुक्ति बाहिनी के सामने समर्पण किया था। इसके बाद ही बांग्लादेश का निर्माण हुआ था। काबुल के एक मशहूर एक्विविस्ट फजल अफगान ने इसको लेकर एक्स पर लिखा कि 1971 में भारतीयों के सामने समर्पण किया। 2025 में अफगानों के सामने सरेंडर किया। लंबा समय हुआ, लेकिन टीम 93000 के लिए कुछ नहीं बदला। उन्होंने आगे लिखा कि आज नहीं तो कल अफगानिस्तान भारत का 93000 का रिकॉर्ड तोड़ेगा। वहीं, लेखक और मिलिट्री के दिग्गज कंवलजीत सिंह विल्लो भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने 1971 के पाकिस्तानी सरेंडर वाली फोटो पोस्ट करते हुए लिखा, '93000 हमेशा से पसंदीदा अंक रहा है।' अफगानिस्तान के पत्रकार वकील मुबारिज ने भी पाकिस्तान का मजाक उड़ाया।

गुजरात कैबिनेट में 19 नए चेहरे, 3 महिलाओं को जगह

पहले 16 मंत्रियों का ले लिया इस्तीफा, फिर 26 की शपथ

गांधीनगर (एजेंसी)। गुजरात में भाजपा ने महज 3 साल में सीएम भूपेंद्र पटेल के अलावा लगभग पूरी सरकार बदल दी। पार्टी ने गुरुवार को 16 मंत्रियों से इस्तीफा लिया और शुक्रवार को 26 मंत्रियों को शपथ दिलाई गई। कैबिनेट

● सीएम भूपेंद्र पटेल समेत 8 मंत्री सिर्फ पटेल समाज से हैं

में 19 नए चेहरे हैं, जबकि पिछली बार के 6 मंत्री ही अपना पद कायम रख पाए हैं। वहीं, 8 ओबीसी, 3 एससी, 4 एसटी और 3 महिलाएं हैं। सीएम समेत 8 मंत्री पटेल समाज से हैं। खास बात यह है कि हटाए गए मंत्रियों पर न तो कोई आरोप था और न कोई कानूनी केस। इसके बावजूद सरकार में बड़े फेरबदल को गुजरात में 2027 के विधानसभा चुनाव की



तैयारी के तौर पर देखा जा रहा है। भाजपा ने महज 3 साल में सीएम के अलावा पूरी सरकार को बदल दिया है। पार्टी ने भूपेंद्र पटेल के सभी

मुख्यमंत्री आज ब्यावरा से देंगे 277 करोड़ की राहत

डॉ. यादव 33 करोड़ की जल प्रदाय योजना शुरू करेंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 18 अक्टूबर को राजगढ़ जिले के ब्यावरा में किसानों को राहत राशि देंगे। इस दौरान वे प्राकृतिक आपदा से प्रभावित किसानों के खातों में 277 करोड़ रुपए की राहत राशि सीधे ट्रांसफर करेंगे। कार्यक्रम नवीन दशहरा मैदान, हॉस्पिटल रोड ब्यावरा में आयोजित होगा।



डॉ. यादव इस मौके पर 33 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली ब्यावरा नगर जल प्रदाय योजना का भूमिपूजन करेंगे। इसके साथ ही 193 करोड़ रुपए के 41 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया जाएगा। इनमें सड़क, पेयजल, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े कई काम शामिल हैं, जिनसे जिले के नागरिकों को सीधा लाभ मिलेगा। कार्यक्रम में प्रदेश सरकार के कई मंत्री और जनप्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। इनमें जिले के प्रभारी मंत्री चैतन्य काश्यप, राज्य मंत्री नारायण सिंह पवार, राज्य मंत्री गौतम टेटवाल, सांसद रोडमल नागर, जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, जिला पंचायत अध्यक्ष चंदर सिंह सौधिया, विधायक अमर सिंह यादव, हजारीलाल दांगी, मोहन शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष ज्ञानसिंह गुर्जर, जनपद पंचायत अध्यक्ष राधाबाई और नागर पालिका अध्यक्ष लीलादेवी शामिल रहेंगे।

लद्दाख में भारतीय सेना ने बना लिया 'मदर हब'

अब हर मौसम में रहेगी पूरी तैयारी, देखते रह जाएंगे चीन और पाकिस्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना के नई पीढ़ी के वाहनों के लिए लद्दाख में एक विशाल लॉजिस्टिक हब स्थापित किया गया है, जिसे 'मदर हब' कहा जा रहा है। लेह-लद्दाख से पाकिस्तान और चीन की लंबी सीमाएं जुड़ती हैं, लेकिन यहां के दुर्गम इलाकों में साल के 6 महीने खराब मौसम की वजह से आवाजाही बहुत ही मुश्किल रहती है। भारतीय सेना ने इसी को देखते हुए, वहां नई पीढ़ी के वाहनों की मरम्मत के लिए बड़ा सेंटर स्थापित करके सेना की ऑपरेशनल ताकत में कई गुना बढ़ोतरी कर दी है। यह नया हब सेना को ऊंचाई वाले इलाकों में अपने वाहनों को बेहतर ढंग से चलाने और उनकी देखभाल करने में सहायता करेगा। इससे सीमा पर सेना की ताकत और बढ़ेगी। फायर एंड प्युरी कोर के जनरल ऑफीसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल हितेश भल्ला ने लेह में गुरुवार को इस नई सुविधा का उद्घाटन किया है। रक्षा मंत्रालय के एक प्रवक्ता के मुताबिक यह 'मदर हब' ऊंचाई वाले दुर्गम इलाकों में सेना की ऑपरेशनल क्षमता में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी कर देगा। क्योंकि, अब ऐसे सैन्य वाहनों को मरम्मत के लिए दूर नहीं भेजना होगा। आने वाले समय में भारत-पाकिस्तान और भारत चीन सीमा के करीब कारगिल, तंगसे और न्याओमा जैसे क्षेत्रों में इसी तरह से सैटेलाइट हब बनाने की भी योजना है।



सभी तरह की लॉजिस्टिक और मेंटेनेंस सुविधा

लद्दाख के ज्यादातर क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में पहुंचना बहुत ही मुश्किल होता है। इससे आधुनिक नई पीढ़ी के वाहनों के संचालन में जो दिक्कतें आती हैं, उन्हें 'मदर हब' की वजह से बहुत बड़ी राहत मिलने वाली है। क्योंकि, इसे इस तरह से डिजाइन किया गया है कि सभी तरह की लॉजिस्टिक और मेंटेनेंस का काम यहीं पर हो जाए और उन्हें दूर भेजने की जरूरत ही न पड़े। इस हब में मरम्मत के लिए सभी तरह के उपकरण, कलपुर्जे उपलब्ध होंगे, ताकि वाहनों के साथ किसी तरह की दिक्कत आने पर उन्हें तत्काल वहीं पर ठीक किया जा सके, जिससे उनकी उपलब्धता में अब परेशानी नहीं होगी।

स्कूलों-कॉलेजों में संघ की गतिविधियों पर लगेगा बैन

कर्नाटक कैबिनेट का बड़ा फैसला, नया कानून जल्द



बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक मंत्रिमंडल ने सरकारी स्कूलों और कॉलेज परिसरों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों को रोकने के लिए नियम लाने का फैसला किया है। राज्य के मंत्री प्रियांक खरोगे ने इसकी जानकारी

दी है। उन्होंने कहा कि गुरुवार को कर्नाटक कैबिनेट ने राज्य के सरकारी स्कूलों और कॉलेजों के परिसरों में संघ की गतिविधियों को रोकने के लिए नियम लाने का फैसला किया है। खरोगे की यह टिप्पणी कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की उस टिप्पणी के बाद आई है, जिसमें उन्होंने एक दिन पहले ही कहा था कि उनकी सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि कैसे सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी संगठन लोगों को परेशान न करे। कर्नाटक कैबिनेट के इस फैसले से राज्यभर के सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों और कॉलेजों के परिसरों में अब आरएसएस की बैठकों और अन्य गतिविधियों पर प्रतिबंध लगने की संभावना है।

पाकिस्तान के नॉर्थ वजीरिस्तान में आर्मी कैंप पर टीटीपी का हमला

● 7 पाकिस्तानी सैनिकों की मौत, 13 घायल, 4 उग्रवादी भी मारे गए

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के नॉर्थ वजीरिस्तान के मीर अली इलाके में शुक्रवार को आत्मघाती हमला हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस हमले में 7 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए हैं। इसके अलावा 13 घायल हुए हैं। पाकिस्तानी अधिकारियों के मुताबिक हमले के लिए जिम्मेदार 4 उग्रवादी भी मारे गए हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक एक उग्रवादी ने विस्फोटकों से भरी गाड़ी को आर्मी कैंप की दीवार से टकरा दिया। इसके अलावा तीन कैंप के अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे, जो जवाबी कार्रवाई में मारे गए। पाकिस्तानी अधिकारियों ने दावा किया है कि हमले में उनका कोई भी सैनिक नहीं मारा गया है।



2 नवंबर से ट्रेनिंग कैंप, खड़गे समेत कई एक्सपर्ट आएंगे

एमपी के कांग्रेस जिलाध्यक्षों की राहुल गांधी लेंगे क्लास

भोपाल। एमपी के कांग्रेस जिलाध्यक्षों की अगले महीने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी क्लास लेंगे। पचमढ़ी के होटल हवाईलैंड में 2 नवंबर से 11 नवंबर तक ट्रेनिंग कैंप चलेगा। सभी 71 जिला अध्यक्ष 10 दिन यहां ही रहेंगे। पार्टी ने इसके लिए दिशा निर्देश जारी कर दिए हैं। इस ट्रेनिंग कैंप में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, जयराम रमेश, सुप्रिया श्रीनेत, पवन खेड़ा, परिस्थितियों, चुनौतियों और भविष्य की रणनीति पर चर्चा कर सकते हैं।



एक्सपर्ट शामिल होंगे। बिहार चुनाव के चलते राहुल गांधी के आने की तारीख तय नहीं हुई है। एमपी कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी को दो दिन शामिल रहने का प्रस्ताव भेजा गया है। ट्रेनिंग के दौरान राहुल गांधी जिला अध्यक्षों को न केवल संबोधित करेंगे, बल्कि, जिला अध्यक्षों से वन टू वन बातचीत भी करेंगे। जिला अध्यक्षों से उनके जिले की सामाजिक, राजनीतिक

बेंगलुरु शहर में अब बनेगा नया बिजनेस कॉरिडोर

शहर में जाम का होगा काम तमाम, नया है प्रोजेक्ट

बेंगलुरु (एजेंसी)। देश का बड़ा औद्योगिक शहर बेंगलुरु किलोमीटरों तक लगने वाले जाम के चलते चर्चा में रहा है। शहर का जनजीवन भी इस जाम की समस्या से प्रभावित हुआ है और अब इससे निपटने के लिए बेंगलुरु बिजनेस कॉरिडोर बनाने की तैयारी है। इस 117 किलोमीटर के कॉरिडोर से टेक सिटी को जाम मुक्त करने का प्लान है। यह दिल्ली के रिंग रोड जैसा होगा, जो पूरे बेंगलुरु को बाहर से होते हुए ही कनेक्ट करेगा। कर्नाटक कैबिनेट की ओर से इसकी मंजूरी मिल गई है। इस प्रोजेक्ट को बेंगलुरु डिवेलपमेंट अथॉरिटी की ओर से पूरा किया जाएगा और इसकी टाइमलाइन दो साल की रखी गई है।



इजरायली रडार और ब्रह्मोस की ताकत से है लैस

स्वदेशी योद्धा ने भरी ऐतिहासिक उड़ान, तेजस का युग शुरू!

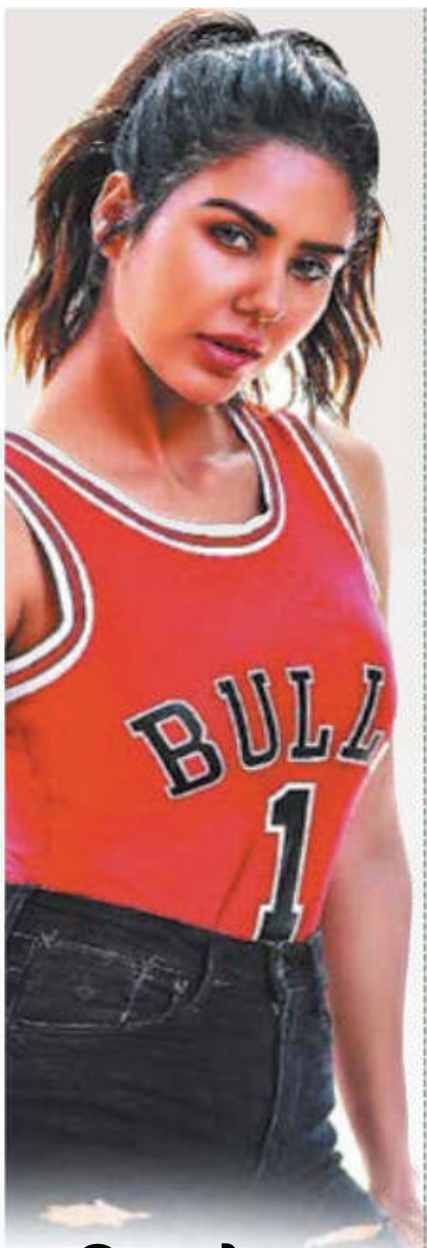
नई दिल्ली (एजेंसी)। शुक्रवार का दिन भारतीय रक्षा इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) की नासिक फैसिलिटी से लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) तेजस एमके-1ए ने अपनी पहली सफल उड़ान भरी। इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भी मौजूद थे। एसयू-30 एमकेआई और एचटीटी-40 ट्रेनर विमानों की फ्लाई-पास्ट के बीच यह उड़ान न केवल एक तकनीकी उपलब्धि है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत अभियान की जीत भी है। यह स्वदेशी योद्धा



भारत की वायु सेना को कैसे नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। तेजस का सफर आसान नहीं था। 1980 के दशक में शुरू हुआ यह प्रोजेक्ट मूल रूप से लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एलसीए) के रूप में विकसित किया गया। लेकिन इसने कई चुनौतियों का सामना किया। इंजन की कमी, तकनीकी जटिलताएं और ग्लोबल सप्लायर चैन की बाधाओं ने इसे विलंबित किया। मूल तेजस एमके-1 को 2015 में भारतीय वायु सेना (आईएएफ) में शामिल किया गया, लेकिन एमके-1ए संस्करण की प्रतीक्षा लंबी खिंच गई।

वायुसेना की चुनौतियां और भविष्य की योजना

भारतीय वायुसेना वर्तमान में अपनी स्वीकृत 42 स्क्वाड्रनों की तुलना में केवल 29 स्क्वाड्रनों पर संचालित हो रही है। वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने हाल ही में कहा था कि वायुसेना को हर साल कम से कम दो स्क्वाड्रन (30-40 विमान) चाहिए ताकि उसका संतुलन बनाए रखा जा सके। 2021 में रक्षा मंत्रालय ने एचएएल के साथ 48,000 करोड़ रुपये का कॉन्ट्रैक्ट किया था, जिसके तहत 83 तेजस एमके 1ए विमान खरीदे जाने थे।



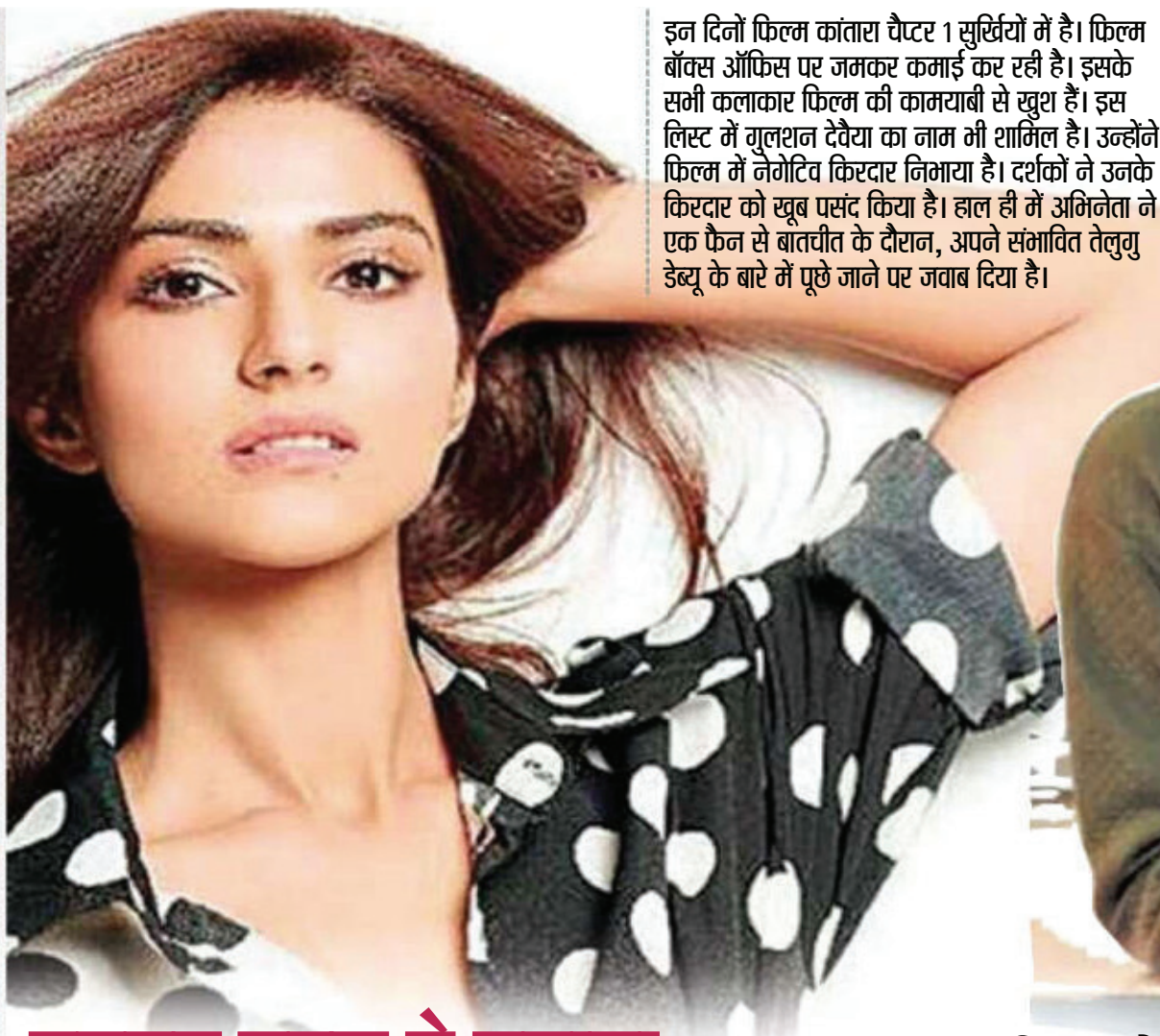
करियर के शुरुआत में कई बॉलीवुड फिल्मों दुकराने का है पछतावा

हाल ही में हाउसफुल 5 और बागी 4 में नजर आ चुकीं अभिनेत्री सोनम बाजवा इन दिनों अपने एक बयान को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में उन्होंने एक इंटरव्यू में खुलासा किया है कि शुरुआत में उन्होंने कई बॉलीवुड फिल्मों दुकरा दीं, जिसका उन्हें आज पछतावा हो रहा है। उन्होंने बताया कि उस समय उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि उनकी भूमिका पर लोग कैसी प्रतिक्रिया देंगे। सोनम बाजवा ने बताया मैंने कई बॉलीवुड फिल्मों को मना कर दिया। मुझे लग रहा था कि क्या पंजाब में लोग इसे पसंद करेंगे? मैं सोच रही थी कि मेरी फिल्मों को मेरे परिवार के लोग देखेंगे? तब मैं फिल्मों में किसिंग सीन करने से बहुत डरती थी। मैं सोचती थी कि लोग इस बारे में क्या सोचेंगे? मैं सोच रही थी जिन लोगों ने मुझे यहां तक पहुंचाया है, वह मेरे बारे में क्या सोचेंगे? क्या मेरा परिवार यह समझेगा कि यह सिर्फ फिल्म के लिए है? मेरे दिमाग में यह सारे सवाल थे।

सोनम ने आगे बताया कि उनके माता-पिता ने उनका साथ दिया। उन्होंने कहा यह कुछ साल पहले की बात है। मैंने अपने मम्मी-पापा से इस बारे में बात की। उन्होंने कहा, हां, अगर यह किसी फिल्म के लिए है, तो ठीक है। इस पर मैं बहुत हेरान थी। मैं सोच रही थी कि मैंने पहले उनसे बात क्यों नहीं की?

सोनम बाजवा का वर्कफ्रंट

सोनम के काम की बात करें तो, वह जल्द ही अपकमिंग फिल्म एक दीवाने की दीवानियत में नजर आने वाली हैं। यह बॉलीवुड फिल्म 21 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। उन्हें आखिरी बार टाइगर श्रॉफ के साथ फिल्म बागी 4 में देखा गया था।



प्रनूतन बहल ने बताया इंडस्ट्री में किन दिक्कतों से गुजरते हैं एक्टरों के बच्चे

अभिनेत्री प्रनूतन बहल फिल्म इंडस्ट्री के एक मशहूर परिवार से ताल्लुक रखती हैं। वह मोहनशी बहल की बेटी और दिग्गज अभिनेत्री नूतन की पोती हैं। उन्हें सिनेमाई पहचान विरासत में मिली है। हालांकि प्रनूतन मानती हैं कि उनके लिए इंडस्ट्री में जगह बनाना आसान नहीं रहा। प्रनूतन बहल बॉलीवुड में स्टार किड के संघर्ष के बारे में बात करती हैं।

स्टार किड के लिए आसान नहीं फिल्म इंडस्ट्री

अभिनेत्री ने बॉलीवुड में एक स्टार किड होने के अपने अनुभव और इस सफर में आई मुश्किलों के बारे में खुलकर बात की। एचटी से बात करते हुए उन्होंने बताया कि वह अभिनेताओं से घिरी रहती थीं, इसलिए उनके लिए यह समझना आसान हो गया कि यह एक मुश्किल इंडस्ट्री है। उन्हें पता था कि कई बार बिना काम के भी कई दौर गुजराने पड़ेंगे। उन्हें इस बारे में पहले ही चेतावनी दी जा चुकी थी। उन्होंने यह भी बताया कि इंडस्ट्री में जिन लोगों के माता-पिता नहीं होते, उन्हें चीजें समझ नहीं आतीं, जिससे उनका सफर और भी मुश्किल हो जाता है।

फिल्मों के लिए पैसे नहीं देता परिवार बहल ने आगे कहा हर स्टार किड को सब कुछ आसानी से नहीं मिल जाता, और मैं इसका जीता जागता सबूत हूं। ऐसा नहीं है कि मैं एक एक्टर की संतान हूं इसलिए मुझे सब कुछ आसानी से मिल गया है या मेरा परिवार पीछे से फिल्मों के लिए पैसे दे रहा है।

2018 में मिली पहली फिल्म

अभिनेत्री ने यह भी बताया कि उन्हें एक एक्टर होने के नाते भावनात्मक उथल-पुथल से नहीं जुझना पड़ा, इसलिए उनके लिए सब कुछ कोई झटका नहीं था। उन्होंने कहा कि उन्होंने 2016 में अपने ऑडिशन शुरू किए और 2018 में उन्हें अपनी पहली फिल्म मिली।

प्रनूतन का वर्कफ्रंट

काम की बात करें तो प्रनूतन ने 2019 में जहीर इकबाल के साथ फिल्म नोटबुक से अपने अभिनय करियर की शुरुआत की। दिलचस्प बात यह है कि इस फिल्म के प्रोड्यूसर सलमान खान थे। वह जल्द ही हिंदी-अंग्रेजी फिल्म कोको एंड नट का हिस्सा होगी।

इन दिनों फिल्म कांतारा चैप्टर 1 सुर्खियों में है। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई कर रही है। इसके सभी कलाकार फिल्म की कामयाबी से खुश हैं। इस लिस्ट में गुलशन देवैया का नाम भी शामिल है। उन्होंने फिल्म में नेगेटिव किरदार निभाया है। दर्शकों ने उनके किरदार को खूब पसंद किया है। हाल ही में अभिनेता ने एक फैन से बातचीत के दौरान, अपने संभावित तेलुगु डेब्यू के बारे में पूछे जाने पर जवाब दिया है।

इन हसीनाओं के साथ तेलुगु डेब्यू करना चाहते हैं गुलशन देवैया



गुलशन देवैया सोशल मीडिया पर अपने फैस से जुड़े रहते हैं। हाल ही में वह सोशल मीडिया पर फैस को कांतारा चैप्टर 1 में अपने अनुभवों और अपकमिंग फिल्मों के सवालों के जवाब दे रहे थे। ऐसे में गुलशन से एक फैन ने पूछा कि आप तेलुगु में कब डेब्यू कर रहे हैं? इस पर गुलशन ने हेरान



करने वाला जवाब दिया। उन्होंने लिखा जब सामंथा रुथ प्रभु या साई पल्लवी हां कहेंगी, तभी

तेलुगु में डेब्यू करेंगे। इस पर एक फैन ने लिखा हम आपको तेलुगु खलनायक के रूप में देखना चाहते थे।

कांतारा चैप्टर 1 में गुलशन देवैया ख्याल रहे कि हाल ही में रिलीज हुई फिल्म कांतारा चैप्टर 1 में गुलशन देवैया ने शाही राजकुमार कुलशेखर की भूमिका निभाई। इसके लिए उन्हें खूब प्रशंसा मिली। इसमें ऋषभ शेट्टी ने एक योद्धा का किरदार निभाया है। वही इस फिल्म के निर्देशक और लेखक भी हैं। इसमें रुविमणी वसंत और जयराम भी अहम भूमिका में हैं। गुलशन देवैया ने हाल ही में नेटफिलक्स सीरीज लिगेसी के साथ अपने तमिल डेब्यू की भी घोषणा की है।



शाहरुख खान के साथ टीवी एंड करना मेरे करियर का सबसे यादगार अनुभव

स्वीडन से बॉलीवुड की चकाचौंध में अपनी छाप छोड़ने वाली मीरा उमर आज सिर्फ एक नाम नहीं, बल्कि एक प्रेरणा बन चुकी हैं। संगीत, नृत्य और कला के प्रति उनका जुनून ही पहचान बन गया है, जो सीमाओं, भाषाओं और संस्कृतियों से परे है। अफगानिस्तान में जन्मी, स्वीडन में पली-बढ़ी और भारत में अपने सपनों को आकार देती मीरा की कहानी संघर्ष से भरी है। उन्होंने बात करते हुए अपने करियर को लेकर बात की। काबुल से स्वीडन तक के सफर के सवाल पर मीरा ने कहा कि उनका स्वीडन आना एक लंबी यात्रा का हिस्सा था। उस वक्त वह काफी छोटी थीं, जिसके कारण उन्हें इस यात्रा के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है। उन्होंने कहा, मैं काबुल में पैदा हुई थी। यह 90 के दशक की शुरुआत की बात है, जब वहां युद्ध और तालिबान का बोलबाला था। हमें अपना देश छोड़ना पड़ा और हम

शरणार्थियों के रूप में स्वीडन आए। मैं उस वक्त तीन साल की थी, इसलिए इस सफर की यादें काफी धुंधली हैं, लेकिन मैं बहुत खुश और आभारी हूं कि मेरे माता-पिता ने इतनी हिम्मत की, ताकि हम एक बेहतर जीवन पा सकें। मीरा ने बताया कि उनके करियर में दिलचस्प मोड़ तब आया, जब वह भारत आई और यहां पांच साल रहीं। भारत में उन्होंने डांस इंडस्ट्री को करीब से देखा और कई ऑडिशन, कास्टिंग और शूटिंग्स का हिस्सा बनीं। लेकिन उनके लिए सबसे यादगार अनुभव एक टीवी कमर्शियल था, जो उन्होंने बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान के साथ किया। उन्होंने कहा, यह एक छोटा सा रोल था; मैं सिर्फ तीन सेकंड के लिए स्क्रीन पर हूं। लेकिन उन तीन सेकंड्स में मैं शाहरुख खान के साथ टैगो डांस कर रही थी। उस दिन मैंने सोचा कि इससे बेहतर शायद कुछ नहीं हो सकता।

वेंकटेश दग्गुबाती की संक्रांतिकी वस्तुनम के हिंदी रीमेक में नजर आएंगे अक्षय कुमार

तेलुगु सिनेमा के सुपरस्टार वेंकटेश दग्गुबाती की ब्लॉकबस्टर फिल्म संक्रांतिकी वस्तुनम अब हिंदी में बनने जा रही है। इस फिल्म ने साउथ बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया था और अब बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार इसे नए अंदाज में बड़े पर्दे पर लेकर आने वाले हैं।

एक्शन-कॉमेडी फिल्म का हिंदी रीमेक

रिपोर्ट के मुताबिक वेंकटेश की इस जबरदस्त एक्शन-कॉमेडी फिल्म का हिंदी रीमेक बनाने की तैयारी जोर-शोर से चल रही है। इस फिल्म को निर्देशित किया था अनिल रविपुडी ने और यह साल की दूसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली तेलुगु फिल्म साबित हुई थी। रिपोर्ट्स के

मुताबिक, फिल्म ने दुनिया भर में 250 से 300 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

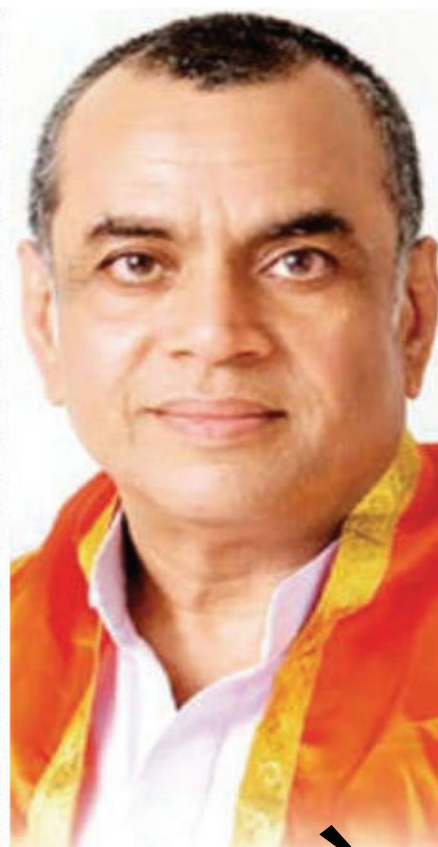
अक्षय कुमार बने वेंकटेश के किरदार के नए चेहरे

रिपोर्ट की मानें तो अक्षय कुमार ने इस रीमेक के लिए अपनी हामी भर दी है। एक सूत्र के हवाले से बताया गया कि अक्षय को तेलुगु फिल्म का कॉन्सेप्ट और स्क्रीनप्ले इतना पसंद आया कि उन्होंने तुरंत इसके हिंदी रीमेक का फैसला कर लिया। फिल्म के निर्माता दिल राजू, जिन्होंने ओरिजिनल वर्जन को भी प्रोड्यूस किया था, अब इसके हिंदी रूपांतरण की भी जिम्मेदारी संभालेंगे। हालांकि, फिल्म की लीड एक्ट्रेस का नाम अभी तय नहीं किया गया है। कास्टिंग टीम फिलहाल इस पर काम कर रही है। बताया जा रहा है कि शूटिंग पहले शुरू होनी थी, लेकिन अक्षय की व्यस्त शेड्यूल के कारण इसे कुछ समय के लिए टाल दिया गया था। संक्रांतिकी वस्तुनम में एक भारतीय सीईओ

आकल्ला (अवसरला श्रीनिवास) का अपहरण हो जाता है, जो हैदराबाद में वल्टेड की नंबर-वन टेक कंपनी का दौरा करने आया होता है। इसके बाद कहानी में एंट्री होती है वाईडी राजू (वेंकटेश) की, जो एक निर्लंबित पुलिस अधिकारी होता है। घटनाओं के सिलसिले में उसकी पत्नी भाग्यलक्ष्मी (ऐश्वर्या राजेश) और पूर्व प्रेमिका मीनाक्षी (मीनाक्षी चौधरी) भी कहानी में शामिल हो जाती हैं। ये तीनों मिलकर अपहरण की इस रहस्यमयी घटना को सुलझाने की कोशिश करते हैं।

अक्षय की आने वाली फिल्मों

काम के मोर्चे पर बात करें तो अक्षय की हालिया फिल्म जॉली एलएलबी 3 सितंबर में रिलीज हुई थी। आने वाले साल में वो भूत बंगला में परेश रावल, तब्बू और वामिका गब्बी के साथ नजर आएंगे। इसके अलावा अक्षय की



भारत के इतिहास की बात है द ताज स्टोरी

स्वर्णिम ग्लोबल सर्विसेज प्रा. लि. और सीए सुरेश झा द्वारा प्रस्तुत, तुषार अमरीश गोयल द्वारा लिखित और निर्देशित तथा परेश रावल अभिनीत द ताज स्टोरी का हाल ही में एक और प्रभावशाली डायलॉग प्रोमो रिलीज हुआ है, जिसने दुनिया के सात अजूबों में शामिल ताजमहल को देशभर में राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बना दिया है। इस नए जार्ड किए गए डायलॉग प्रोमो में परेश रावल अपन गूंजती आवाज में गहराई से अपनी बात रखते हुए कहते हैं, यह मुद्दा हिंदू या मुसलमान का नहीं बल्कि भारतीय इतिहास का है। उनके ये शब्द एक सशक्त संदेश देते हैं कि भारत का अतीत किसी एक धर्म का नहीं, बल्कि साझा विरासत का प्रतीक है, जहाँ हिंदू और मुसलमान दोनों की योगदान का कहानी एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई है साथ ही फिल्म इस विचार को भी सामने रखती है कि इतिहास को चुनिंदा नजरिए से देखने के बजाय, सच्चाई को ईमानदारी से स्वीकारना ही असली सम्मान है। आस्था और राजनीति से ऊपर उठकर यह संवाद इस बात पर जोर देता है कि हमारा अतीत केवल तथ्यों के आधार पर समझ जाए, तभी उसका वास्तविक आदर हो सकता है। सर

पूछिए तो यह संवाद फिल्म को सिर्फ एक मनोरंजकता के साथ नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आत्ममंथन के रूप में स्थापित करता है, जं दर्शकों को सोचने पर मजबूर करता है कि इतिहास को अब तक कैसे बताया, लिख और याद किया जाता रहा है गौरतलब है कि परेश रावल, जाकिर हुसैन अमृता खानविलकर, स्नेहा वाघ, और नमिंत दास जैसे सशक्त कलाकारों से सजी यह फिल्म एक तीखा सामाजिक ड्रामा है, जो आज के समय का सबसे चुनौतीपूर्ण संवाद उठाती है और वर सवाल है आजादी के 79 साल बाद भी, क्या हम अब भी बौद्धिक आतंकवाद के गुलाम हैं? द ताज स्टोरी सिर्फ एक ऐतिहासिक फिल्म नहीं बल्कि एक सिनेमा आधारित विमर्श है, जो सामाजिक टिप्पणी और ऐतिहासिक तथ्यों की नई व्याख्या के साथ लेकर चलता है। 3 अक्टूबर 2025 को देशभर में भव्य रिलीज के लिए तैयार द ताज स्टोरी निश्चित रूप से दर्शकों को सोचने सवाल करने और इतिहास तथा आजादी के मायनों के नए सिरे से समझने के लिए प्रेरित करेगी



Sankranthiki Vasthunam

वेलकम टू द जंगल भी पाइपलाइन में है, जो एक मल्टीस्टारर कॉमेडी है। वहीं, वह 'हैवान' फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हैं जिसमें उनके साथ सैफ अली खान, सैयामी खेर और श्रिया पिलगांवकर नजर आएंगी।

सभी क्षेत्रवासियों को
दीपावली गोवर्धन भाईदूज की
हार्दिक शुभकामनाए



श्री हंसराज लूणा
थाना अधिकारी टिब्बी हनुमानगढ़

राजस्थान बरड़ खान मजदूर संघ बून्दी की ओर से
सभी देशवासियों को दीपावली के पावन पर्व की
हार्दिक बधाई शुभकामनाए

ये दीपावली का पावन पर्व आपके जीवन में रोशन
खुशियां लेकर आये।



रमेश कुमार गुर्नार
राजस्थान बरड़ खान मजदूर संघ बून्दी



रामदेव भाट
राजस्थान बरड़ खान मजदूर संघ बून्दी

सौजन्य से राजस्थान बरड़ खान मजदूर संघ बून्दी राजस्थान

दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं एवं ढेर सारी
शुभकामनाएं
आप सभी के जीवन को ऊर्जा
आरोग्य एवं समृद्धि से आलसित करें



दिनेश भाई मीणा
कोसेलाव

दीपावली
दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं
एवं ढेर सारी शुभकामनायादूज की
हार्दिक शुभकामनाएं



गौरव गोयल
युवा भाजपा नेता
मंत्री अग्रवाल समाज
पुराना शहर मंडल धौलपुर



मनीषा गोयल
पार्षद नगर परिषद धौलपुर

दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएं एवं ढेर सारी
शुभकामनाएं
आप सभी के जीवन को ऊर्जा
आरोग्य एवं समृद्धि से आलसित करें



अनिता चौधरी
जिला परिषद सदस्य



मनमोहन इयारा
भाजपा नेता एवं समाजसेवी

शुभ दीपावली
सुख शांति एवं समृद्धि की मंगलमय शुभकामनाओं
के साथ आपसभी को
धनतेरस, दीपावली
गोवर्धन पूजा एवं भैयादूज
की हार्दिक बधाई

विधान सभा क्षेत्र रामगढ़



एश्वरी कट अमित
भारद्वाज (पत्रकार)



श्रीमती एश्वरी कट चंचल
अमित भारद्वाज



अनंद भारद्वाज
ब्लॉक कांग्रेस महामंत्री व
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकार

आप सभी को
दीपावली गोवर्धन भाईदूज की
हार्दिक शुभकामनाएं



सुरेंद्र सिंह नाथावत (महेशवास कलौ)
युवा भाजपा नेता



श्रीमती अचरज कौर
जिला पार्षद वार्ड न.35 जिला परिषद जयपुर
पूर्व उप प्रधान जालसू जयपुर



कर्नल राजयवर्धन सिंह रातोड़
कैबिनेट मंत्री राजस्थान

आप सभी को
दीपावली गोवर्धन भाईदूज की
हार्दिक शुभकामनाएं



गोविन्द ढाकुर
जनसेवक आमेर विधानसभा
पूर्व प्रदेश अध्यक्ष युवा मोर्चा राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी
एवं पूर्व राष्ट्रीय महासचिव युवा मोर्चा भगवा रक्षा दल